भगवान शिव

(अध्यात्मशास्त्रीय विवेचन, उपासना एवं शिवचालीसा)

(Hindi)

संकलनकर्ता

परात्पर गुरु डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

अबतक ३४,७०० प्रतियां प्रकाशित !

अनुक्रमणिका

卐	**शिवजीसे संबंधित विवेचनका महत्त्व**	**६**
卐	**भूमिका**	**७**
१.	व्युत्पत्ति एवं अर्थ	८
२.	कुछ अन्य नाम	८
३.	विशेषताएं (शारीरिक एवं आध्यात्मिक)	९
४.	कार्य	
५.	शिवके रूप	१७
६.	मूर्तिविज्ञान	२२
७.	सनातन-निर्मित शिवजीका सात्त्विक 'चित्र' एवं 'नामजप-पट्टी'	२५
८.	शिवजीके प्रसिद्ध स्थान	२८
९.	उपासना	३२
卐	**आरतीका महत्त्व एवं शिवजीकी आरती**	**६४**
卐	**शिवचालीसा एवं अर्थ**	**६७**

शिवजीसे संबंधित विवेचनका महत्त्व

आध्यात्मिक उन्नतिके लिए ‘पिंडसे ब्रह्मांडतक’की यात्रा पूर्ण करनी पडती है । इसका अर्थ है कि जो तत्त्व ‘ब्रह्मांड’में अर्थात शिवमें हैं, उनका ‘पिंड’में अर्थात जीवमें आना आवश्यक है । तभी जीव शिवसे एकरूप हो सकता है । पानीकी बूंदमें तेलका थोडासा भी अंश हो, तो वह पानीमें पूर्णरूपसे घुल नहीं सकता; उसी प्रकार जबतक शिवभक्त, शिवकी सर्व विशेषताओं को आत्मसात नहीं कर लेता, तबतक वह शिवसे एकरूप नहीं हो सकता अर्थात उसकी सायुज्य मुक्ति नहीं हो सकती । अतः इस लघुग्रंथमें दी गई शिवकी विशेषताएं, साधकोंके लिए मार्गदर्शक सिद्ध होंगी ।

विष्णु, राम, कृष्ण, हनुमान, दत्तात्रेय देवता, शक्ति, श्री गणपति एवं सरस्वतीसे संबंधित विशेष ज्ञान देनेवाले लघुग्रंथ भी उपलब्ध हैं ।

भूमिका

अधिकांश लोगोंको देवतासे संबंधित जो अल्प-सा ज्ञान रहता है, वह बचपनमें पढी अथवा सुनी गई कहानियोंद्वारा होता है । इस अल्प ज्ञानके कारण देवतापर विश्वास भी अल्प ही रहता है । देवतासे संबंधित अधिक ज्ञान प्राप्त होनेपर विश्वास दृढ होता है, फलस्वरूप साधना भी उचित ढंगसे हो पाती है । इस दृष्टिकोणसे इस लघुग्रंथमें शिवसे संबंधित, प्रायः अन्यत्र अनुपलब्ध किंतु उपयुक्त अध्यात्मशास्त्रीय विवेचन प्रस्तुत करनेपर विशेष ध्यान दिया गया है । शिवजीके विषयमें विस्तृत ज्ञान 'शिव' ग्रंथमें दिया है ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि इस लघुग्रंथको पढकर प्रत्येक व्यक्तिको अधिकाधिक साधना करनेकी प्रेरणा मिले । - **संकलनकर्ता**